गोविन्द शर्मा

अक्ल की खुराक

एक था राजा। उसे नया महल बनवाने की सूझी। मज़दूरों का काम बिना पैसे दिए किसानों से करवाने लगा। किसानों ने कहा भी कि आजकल फसल बोने के दिन हैं। हमें अपने खेतों में काम करने दें। पर राजा नहीं माना। वह सिपाही भेजकर किसानों को बुलाने लगा। बेचारे किसान, दिन में राजा के लिए काम करते और रात में अपने खेतों में काम करते।

महल तैयार हो गया। राजा उसमें रहने लगा। अब उसे एक नई सनक सवार हुई। किसानों को बुला-बुलाकर महल दिखाता और उनसे अपनी प्रशंसा सुनता। वे निवेदन करते रहते कि मालिक फसलें पक चुकी हैं। उन्हें काटने तथा उनकी रखवाली के लिए हमारा खेतों में रहना ज़रूरी है। साल भर की मेहनत का सवाल है। हम बाद में आपका महल देखने आएँगे। राजा नहीं माना। बोला, "मेरे बुलाने पर जो किसान नहीं आएगा, उसे जेल भिजवा दूँगा।"

एक दिन मेघाराम के परिवार की बारी आई। सबसे पहले बूढ़ा मेघाराम राजा का महल देखने गया। राजा ने सबसे ऊँची मंज़िल का अपना कमरा दिखाया। कमरा देखकर मेघाराम बोला, "यह तो बहुत सुन्दर है। पर एक बात है....।"

"क्या?" राजा बोला। "आप इस कमरे में मर जाएँ तो आपको नीचे कैसे ले जाया जाएगा? आपके महल का जीना तो बहुत सँकरा है।" यह सुनकर राजा को गुस्सा आ गया। उसने मेघाराम को जेल में डलवा दिया। उसका बड़ा बेटा अपने पिता को छुड़वाने गया तो उसे भी महल दिखाया और राजा ने बताया कि तुम्हारे मूर्ख पिता ने ऐसी भद्दी बात कही थी। वह बोला, "मेरे पिता जी खेत-खलियान में काम करने वाले हैं। उनके पास समझ कम है। वरना वे ऐसा सवाल नहीं करते।"

राजा खुश हो गया। राजा ने उससे उसके पिता वाला सवाल पूछा। वह बोला, "यह तो मामूली बात है। अगर आप इस कक्ष में मर गए तो आपको सीढ़ियों से नीचे ले जाने की ज़रूरत ही नहीं है। कितनी बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ हैं। आपको खिड़की से सीधे ज़मीन पर फेंक दिया जाएगा।" राजा ने उसे भी जेल भिजवा दिया गया। दोनों को छुड़वाने के लिए छोटा बेटा आया। आते ही उसने कहा, "मेरे पिता और बड़े भाई में अक्ल ही नहीं है। हर जगह गलत सुझाव देते हैं। चाहे आप मरे हुए ही क्यों न हों, खिड़की से फेंकने पर तो चोट ही आएगी।" राजा गुस्से में आग बबूला हो गया। उसने छोटे बेटे को भी कैद कर लिया।

शाम को किसान की पत्नी घास का गठ्ठर लेकर राजा के महल में आई। राजा ने पूछा, "तुम यह घास क्यों लाई हो?" वह बोली, "राजा, आपने मेरे तीन पशु पकड़ रखे हैं। यह घास मुझे उन्हें ही खिलाना है।" राजा समझ गया कि यह उसकिसान की पत्नी और उन दो युवकों की माँ है। राजा ने उसे सारी बात बताई। वह बोली, "इसीलिए तो मैं उन्हें पशु कह रही हूँ। भला यह भी कोई चिन्ता की बात है? अरे, जुल्मी मर गया तो मर गया, पीछा छूटा। उसे कमरे में ही पड़ा रहने दिया जाए। हमें क्या?" उसकी बात सुनकर राजा को एक बार तो गुस्सा आया। फिर वह देर तक सोचता रहा। थोड़ी देर बाद उसने तीनों को रिहा कर दिया।